# DEN NEWS

**(Desert Environment News)**

**केन्द्रीय रुक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान**

Vol. 2 | No.1- 2 | March-June, 1998


## सम्पादकीय

हिन्दी में 'मरुस्थलीय पर्यावरण सूचना केन्द्र' द्वारा प्रकाशित यह 'सूचना पत्र' आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। साथ ही भारत वर्ष में मनाये जाने वाले 'हिन्दी सप्ताह' (14-21 सितम्बर 98) में इसे आपके समक्ष प्रस्तुत नहीं कर सकनें हेतु खेद भी अनुभव करता हूँ।

मरुभूमि मात्र बंजर, रेतीली, शुष्क, जल एवं वनस्पति रहित भूमि ही नहीं है अपितु अपने गौरवमय इतिहास, प्राकृतिक एवं जैविक विविधता, कला एवं संस्कृति के विपुल भण्डार के फलस्परूप देशी-विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है। प्रतिवर्ष जैसलमेर में मनाये जाने वाले 'डेजर्ट फेयर' ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करली है। स्वतंत्रता के पश्चात केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने इस क्षेत्र के विकास में विशेष रुचि दिखाई। इसी कड़ी में इस क्षेत्र के चहुँमुखी विकास हेतु जोधपुर में 'केन्द्रीय रुक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान' की स्थापना की। इस संस्थान ने पाँच दशकों में किये गये शोध कार्यो से जहाँ मरुस्थल के फैलाव व टीबों के स्थरीकरण में सफलता प्राप्त की है वहीं कृषि एवं प्रसार की विभिन्न तकनीकियों द्वारा मरुभूमि में हरित क्रान्ति लाने में सहयोग प्रदान कर अकाल एवं सूखे की विषमता में कमी लाने का प्रयास किया है। भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा इस संस्थान में 'एनविस केन्द्र' की स्थापना कर मरुस्थलीय सूचनातंत्र को प्रभावी बनाने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत अंक में सम्मिलि दोनों लेखों में जहां मरु पर्यावरण की सुन्दरता व आलौकिकता का वर्णन किया है वही आधुनिकता की होड़ में वनों के विनाश एवं जैविक विविधता के ह्रास की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया है।

आशा है राष्ट्रभाषा को समर्पित यह अंक आपको पसन्द आएगा। आपकी सम्मति एवं सुझावों से अवगत कराने का श्रम करें।

डॉ. दिनेश चन्द्र ओझा
सम्पादक

## सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान में स्थापित 'एनविस डेजर्टीफिकेशन केन्द्र' द्वारा 'डेन न्यूज' का यह अंक हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है। भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा स्थापित इस केन्द्र ने 'मरूस्थलीयकरण' के क्षेत्र में विभिन्न डाटाबेस के निर्माण एवं सूचना सेवाओं के कारण कृषि वैज्ञानिकों एवं शोध छात्रों में अच्छी ख्याति अर्जित कर ली है। हिन्दी में प्रकाशित इस अंक में सम्मिलित किये जाने वाले दोनों लेख मरूस्थलीय पर्यावरण के बारे में ऐतिहासिक व वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करते हैं, वहीं आधुनिकता की दौड़ के फलस्वरूप अंधा-धुंध वनों की कटाई व इन्दिरा गाँधी नहर के फलस्वरूप जैविक विविधता के ह्रास की ओर भी ध्यान आकर्षित करते हैं।

स्वतंत्रता के पच्चासवें वर्ष में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह अंक भारत की धरती के कोने-कोने में फैले सरकारी संस्थानों में राजभाषा रूपी अंकुर को पल्लवित करने में अत्यन्त उपयोगी साबित होगा।

इस अंक में सम्मिलित कलेवर एवं इसके सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

– डॉ. अमरसिंह फरोदा
निदेशक